# मुस्कानारिष्ट

**एक दिन** ब्राण्ड न्यू कार लेकर मुसद्दीलला अपने मित्र से मिलने दूसरे शहर पहुँचे जो मात्र कुछ घंटों की दूरी पर था। मुसद्दीलाल कुछ ही घंटों में फर्राटे से अपनी कार दौड़ाते हुए मित्र के पास जा भी पहुँचे। नई कार देखकर मित्र भी बहुत खुश हुआ। कुछ दिन मित्र के साथ बिताने के बाद मुसद्दीलाल ने घर लौटने का निर्णय लिया और घर वालों को फोन कर बता दिया।

घर पर उनकी पत्नि राह देखने लगी पर कुछ घंटे तो क्या, मुसद्दीलाल दो दिन तक घर नहीं पहुँचे। परेशान पत्नि तीसरे दिन फोन करने ही वाली थी कि थके–माँदे मुसद्दीलाल घर पहुँच ही गए। पत्नि ने पूछा–अजी क्या हो गया? कहाँ रह गए हो आप? सब ठीक तो हैं?

मुसद्दीलाल खीझकर बोले–अरे ये नई कार बनाने वाले तो पागल हैं! अरे जाने के लिए चार गियर दिए हैं और लौटने के लिए सिर्फ एक!!

कनवरलाल ने एयरलाइंस के दफ्तर में फोन लगाया–ये आपकी फ्लाइट जो मुंबई से दिल्ली जाती है, बता सकते हैं, कितना समय लेती है?

दूसरी ओर से आवाज़ आई– एक मिनट सर..... कनवरलाल बोले ''थैंक्यू'' और फोन रख दिया।

मेरा एक मित्र आई सर्जन के यहाँ रिसेप्शनिष्ट है। एक बार एक महिला जिसकी आँखों की सर्जरी हुई थी, अगले दिन गुस्से से लौटी और सर्जन से शिकायत की–

कल आपके यहाँ मेरा विग किसी ने बदल दिया

– यह आप कैसे कह सकती है? ऐसा कुछ नहीं हुआ है।

–अरे ऑपरेशन के बाद मैंने देखा कि जो विग मैंने पहना है, वह बदसूरत और घटियां है।

–''मेरे ख्याल'' से सर्जन विनम्रता से बोला ''आपका कैटरेक्ट का ऑपरेशन सफल रहा है!''

एक आदमी दोपहर बाद डॉक्टर के पास पहुँचा और बताया– डॉक्टर मैं कुछ अच्छा महसूस नहीं कर रहा हूँ डॉक्टर ने उसे देखा, निरीक्षण किया और कमरे से बाहर चला गया। जब डॉक्टर लौटा तो उसके हाथ में तीन प्रकार की गोलियों के डिब्बे थे।

डॉक्टर –ये तीन प्रकार की गोलियाँ आपको लेनी होगी। एक गोली गोल वाली सुबह एक बड़े गिलास पानी के साथ। एक गोली चौकोर वाली दोपहर एक बड़े गिलास पानी के साथ और एक गोली तिकोनी वाली शाम को फिर एक बड़े गिलास के साथ।

आदमी ने घबराकर पूछा–पर डॉक्टर साहब मुझे हुआ क्या है?

डॉक्टर ने शांति से जवाब दिया– आप जरूरत से कम पानी पी रहे हैं!

मेरे घर का रास्ता गड्ढ़ों से भरा हुआ है। रोज मैं अपनी गाड़ी को बचाते हुए दफ्तर जाता था। अचानक एक सुबह दफ्तर को जाते हुए मुझे कुछ इंजीनियर और मजदूर सड़क पर काम करते मिले। मैंने राहत की साँस ली कि चलो आखिरकार किसी को तो सुध आई।

शाम को लौटने पर मैंने पाया कि सड़क पहले की तरह गड्ढ़ों से भरी है और जहाँ सुबह इंजीनियर और मजदूर खड़े थे वहाँ चमकते पीले अक्षरों वाला एक सुंदर सा बोर्ड लगा है, जिस पर लिखा था ''रास्ता खराब है।''

संकलन
सौ. मुक्ता जोशी